इकाई 20 बृहत्त्रयी में पर्यावरण विज्ञान

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य

20.1 प्रस्तावना

20.2 बृहत्त्रयी में पर्यावरण विज्ञान

20.3 सारांश

20.4 शब्दावली

20.5 बोध–अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

20.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

20.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप–

- पर्यावरण की परिभाषा को जानने में सहायक होगी
- बृहत्त्रयी के अन्तर्गत आने वाले ग्रन्थों से परिचित होंगे।
- माघ, भारवि और श्री हर्ष की काव्य शैली को जान पाएंगे।
- बृहत्त्रयी में प्रकृति की सुन्दरता के बारे में जान पाएंगे

20.1 प्रस्तावना

मनुष्य सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। ईश्वर की इस सर्वश्रेष्ठ रचना और मानव समाज एवं सभ्यता को प्रकृति द्वारा प्रदान की गई सर्वश्रेष्ठ एवं मूल्यवान् निधि पर्यावरण का संरक्षण आधुनिक युग का बड़ा दायित्व है। आधुनिक वैज्ञानिक युग में यह आवश्यक है कि प्रकृति द्वारा प्रदत्त इस निधि का बुद्धिमत्तापूर्ण ढंग से उपयोग आवश्यक है। पर्यावरणीय चेतना व पर्यावरण संरक्षण प्रत्येक युग की प्रमुख माँग रही है। शाब्दिक अर्थों में हमारे चारों ओर छाया आवरण (परि़आवरण – पर्यावरण) ही पर्यावरण है– = परिसमन्तात् आवरण–पर्यावरणम्। अर्थात् जिसके अनुसार जो सब ओर से सृष्टि को व्याप्त किए है, वही पर्यावरण है। इसी आवरण में सजीव और निर्जीव सभी तत्त्व विद्यमान हैं। इस परिप्रेक्ष्य से पर्यावरण के घटक तत्त्व हैं– वायु, जल, भूमि, वृक्ष और वनस्पतियाँ। इस हिसाब से पृथ्वी, जल, तेज, वायु, अग्नि, आकाश ध्वनि वृक्ष, वनस्पति आदि पर्यावरण के मूल आधार हैं। इन सभी तत्त्वों के चतुर्दिक हम सभी घिरे हुए हैं और इन्हीं के मध्य हमारा जीवन संभव होता है। वेद में उक्त तत्त्वों के लिए छन्दस्' शब्द प्रचलित है, जिसका अर्थ है– आवरक या पर्यावरण इन घटक तत्त्वों में से प्रत्येक तत्त्व लोक में जीवन शक्ति के लिए आवश्यक उपयोगी व अनिवार्य है। इन जीवनदायक तत्त्वों के अभाव में प्राणियों का जीवित रहना असंभव ही है ये तत्त्व अनादि काल से एक निश्चित अनुपात में प्रकृति में स्थित हैं। यद्यपि मानव अपनी रक्षा व विकास हेतु इन तत्त्वों में सदैव छेड़–छाड़ (दोहन) करता रहा है। आज के परिवेश में यह दोहन इतना अधिक हो गया है कि पर्यावरण का संतुलन बिगड़ने लगा है। जिससे पर्यावरण प्रदूषण बढ़ता ही जा रहा है। यांत्रिक उपकरणों का

अधिकाधिक प्रयोग, वृक्ष–वनस्पतियों की निर्दयतापूर्वक कटाई तथा इसी क्रम में मनुश्य इतना अधिक धुँआ कचरा उर्वरक, तेज ध्वनि तथा विविध प्रकार के हानिकारक गैसों का प्रकृति में उत्सर्जन करने लगा है जिससे उसकी शुद्धता नष्ट हो गयी है। जीवनी प्राणदायिनी शक्ति आक्सीजन के एक मात्र स्रोत वृक्ष–वनस्पतियों की निर्दयतापूर्वक कटाई से मनुष्य का जीवन संकटग्रस्त हो रहा है वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण का संरक्षण करने एवं पर्यावरण प्रदूषण रोकने हेतु जलवायु, वृक्षों एवं वनस्पतियों को प्रमुखतम कारक स्वीकार किया है।

त्रीणि छंदासि कवयो वि येतिरे पुरुरूपं दर्शत विश्वचक्षणम्।
आपो वाता ओषधयःय तान्येकस्मिन् भुवन अर्पितानि।।

पर्यावरण हमारे अस्तित्त्व का मूल आधार है। भारतवर्ष के ऋषियों–मुनियों ने पंच भौतिक तत्त्वों को देवों का रूप दिया है। मानव जीवन के कल्याण हेतु पर्यावरण का महत्त्व उसकी सुरक्षा, प्रकृति के साथ सामीप्य, संवेदनशीलता, रोगों के उपचार तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी अनेकशः उपयोगी उपाय ऋषियों ने उद्घाटित किये। पर्यावरण चेतना व संरक्षण को वैदिक ऋषियों ने जन–जीवन से संयुक्त किया है। उनकी सूझ–बूझ गहन व व्यापक रही है। प्रकृति के साहचर्य में ही भारतीय संस्कृति फली फूली। वैदिककालीन ऋषियों ने समाज व पर्यावरण के समस्त घटक तत्त्वों में सामंजस्य स्थापित करने हेतु न केवल अथक प्रयास किया अपितु उसके संरक्षण के माहात्म्य को भी बढ़ावा दिया। पृथ्वी, जल, अग्नि वायु, आकाश ये पंचमहाभूत प्रदूषणग्रस्त न हों इस दिशा में प्रत्यक्षतः परोक्षतः वैदिक ऋषि प्रयासरत रहे।

' बृहत्त्रयी ' के अन्तर्गत संस्कृत साहित्य के निम्नलिखित तीन महाकाव्य माने जाते हैं :–

1) **भारवि–कृत् – किरातार्जुनीय**
2) **माघ–कृत् – शिशुपालवध**
3) **श्रीहर्ष – कृत् – नैषधीयचरित**

संस्कृत साहित्य विश्व का एक अनुपम एवं प्राचीनतम साहित्य है। यह वैदिक तथा लौकिक दो भागों में विभक्त है। उपनिषत्पर्यन्त साहित्य वैदिक तथा तदुत्तरकालीन समग्र साहित्य लौकिक संस्कृत साहित्य में समाविष्ट होता है। इसी लौकिक श्रृंखला में महाकवि भारवि ने किरातार्जुनीय महाकवि माघ ने शिशुपालवध तथा महाकवि श्रीहर्ष ने नैषधीयचरित महाकाव्य की रचना की है। किरातार्जुनीय महाकाव्य की कथावस्तु का मूलस्रोत महाभारतान्तर्गत वनपर्व है। शिशुपालवध महाकाव्य के कथानक का आधार महाभारतान्तर्गत सभा पर्व, राजसूय पर्व, अर्घाभिहरण पर्व तथा शिशुपालवध पर्व है। नैषधीयचरित महाकाव्य की कथावस्तु का आधार महाभारत के अन्तर्गत वनपर्व का प्रसिद्ध नलोपाख्यान पर्व है। इन तीनों महाकवियों की कृतियों के लिए बृहत्त्रयी नाम दिया गया है। बृहत्त्रयी शब्द संस्कृत साहित्य में अत्यन्त प्रचलित हुआ है। इसका अर्थ है–तीन काव्य। इन तीनों काव्य के लिए बृहत् शब्द का प्रयोग इनकी काव्य–सम्पत्ति तथा कलेवर–सम्पत्ति दोनों को ही दृष्टि में रखकर किया गया है। बृहत्त्रयी में तत्कालिक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक तथा भौगोलिक परिस्थितियों की जानकारी मिलती है। बृहत्त्रयी में उस समय की भौगोलिक परिस्थितियों में नदियों का अत्यन्त मनोरम वर्णन किया गया है। नदियों में असि, गङ्गा, जम्बू, ताम्रपर्णी, नर्मदा, यमुना, विपाशा, शोण (सोन), सरयू, सरस्वती तथा

सिप्रा (शिप्रा) इत्यादि नदियों का उल्लेख किया गया है।

20.2 बृहत्त्रयी में पर्यावरण विज्ञान

1. किरातार्जुनीयम् में पर्यावरण

पर्वत वर्णन

किरातार्जुनीय में हिमालय, कैलास तथा इन्द्रकील पर्वत का वर्णन प्राप्त होता है। इन पर्वतों का दृश्य यक्ष के नेत्रों के सामने जैसा आया, उसी प्रकार वर्णित हुआ है। इसलिए इन पर्वतों के प्रति भावों का आश्रय यक्ष ही लगता है। किन्तु यक्ष के अतिरिक्त स्वयं कवि तथा अर्जुन भी आश्रय है, क्योंकि आरम्भ में कवि ने अपनी ओर से हिमालय का वर्णन किया है। अनन्तर अर्जुन हिमालय को देखकर इतने अधिक आश्चर्य चकित हो जाते है कि यक्ष उन्हें देखकर हिमालय–वर्णन करने के अपने लोभ का संवरण नहीं कर पाता। इस प्रकार कवि, अर्जुन और यक्ष तीनों ही पर्वत के प्रति भावों के आश्रय हैं। वैसे इस प्रकार के प्राकृतिक दृश्य श्रोता अथवा पाठक के भावों के भी आलम्बन होते हैं।

पर्वत–वर्णन में उत्प्रेक्षा का सुन्दर प्रयोग हुआ है। हिमालय पर्वत की उच्चता की शोभा का वर्णन उत्प्रेक्षा के सहारे अत्यन्त सुन्दर बन पड़ा है। कवि कहता है 'इसकी ऊँचाई के कारण सूर्य जिस ओर रहता है, उस ओर का भाग प्रकाशित रहता है और दूसरी ओर का भाग घने अन्धकार से आच्छादित रहता है (अर्थात् एक ओर दिन और दूसरी ओर रात्रि रहती है)। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि यह (हिमालय) मानो शिव जी हैं जो गज–चर्म पहने हुए हैं तथा अट्टहास कर रहे हैं (क्योंकि शिव जी के सामने का भाग उनके हास से प्रकाशित रहता है। और पीछे का भाग गज चर्म से अन्धकाराच्छन्न रहता है)। हिमालय में कवि ने नगर की कल्पना की है। हिमालय के भू–भाग नगर के समान हैं। वे नगर विविध रत्नों की किरणों से प्रकाशित हैं। अमराङ्गनामों से उपभुक्त लतायें उस नगर के भवन हैं। ऊँची–ऊँची शिलाओं के बीच रिक्त स्थान नगर के फाटक हैं और सुन्दर पुष्पों के वन ही पुष्पोद्यान हैं। हिमालय को सर्वरत्न–सम्पन्न कहा गया है। इसके शिखर रत्न–राशियों से परिपूर्ण हैं। कन्दरा के प्रदेश लता–गृहों से युक्त हैं। यहाँ के वृक्ष, पुष्प तथा फल सम्पत्ति को धारण करते हैं। हिमालय पर अनेक नदियाँ भी हैं, जिनकी उपमा कवि ने नव–विवाहिता रमणी से दी है। इन सरिताओं में सुर–सुन्दरियाँ जलक्रीडा करती हैं। इन सरिताओं ने वृक्षों से अपने को भावृत किया है तथा इनके तटों पर उशीर उगे हुए हैं। हिमालय पर अनेक वृक्षों तथा पुष्पों के होने का वर्णन किया गया है। वहाँ कमल, कदम्ब तथा तमाल के वन पाये जाते हैं। वहाँ हाथी, सर्प, कलहंस, कुररी, कोकिल आदि विभिन्न पशु–पक्षियों की उपस्थिति का भी वर्णन है। हिमालय की रत्न सम्पन्नता का बार–बार उल्लेख हुआ है। यह हिमालय मानसरोवर को धारण करता है, जिसमें कमल खिले रहते हैं तथा जिसमें कलहंसों का निवास है। इसी हिमालय पर शिव तथा पार्वती अपने प्रमथगण के साथ रहते हैं। इसी पर पार्वती ने शिव प्राप्त्यर्थ कठोर तपःसाधन किया था और यहीं शिव ने विलोल–नेत्रा पार्वती के यवाङ्कुरादि शुभ लक्षण लक्षित तथा कम्प–युक्त पाणि का ग्रहण किया था। हिमालय पर अनेक प्रकार की औषधियां पाई जाती हैं।

हिमालय के पश्चात् कैलास पर्वत का वर्णन प्राप्त होता है। इसी कैलास पर कुबेर ने भगवान् शूली के सन्तोष के लिए अनेक फाटकों से युक्त नगर बनाया था। यह

कैलास पर्वत अनेक रत्नों से सम्पन्न है। यह हरित शाद्वल, नील कमल तथा अनेक रङ्गों के पुष्पों से सदा सुन्दर दिखाई देता है। यहाँ प्राप्त मरकत मणि पर कवि ने भावपूर्ण कल्पना की है 'इसके आस–पास की भूमि पर शुक के बच्चों के सदृश मनोरम मरकतमणि की किरणें अभिनव हरित तृणाङ्कुर की सी दिखाई देती हैं। उन्हें हरिणियाँ घास समझ कर खाने के लिए मुख में लेती हैं और फिर छोड़ देती हैं। वे किरणें सूर्य की किरणों से संवलित होकर अधिक प्रकाश धारण कर लेती हैं।

वन–विहार–वर्णन–

किरातार्जुनीय में अप्सराओं एवं गन्धर्वों की उद्यान–क्रीड़ा का विस्तार से वर्णन किया गया है। इस उद्यान क्रीड़ा वर्णन के आश्रय वैसे तो अप्सराएँ एवं गन्धर्व हैं, किन्तु इस प्रकार के दृश्य श्रोता या पाठक के भावों के भी आलम्बन होते हैं।

वन–विहार की अभिलाषुक सुर–सुन्दरियों ने अपने–अपने प्रिय गन्धर्वों के साथ जिस समय अपनी कान्तियों से पर्वत और वृक्ष–लताओं को उद्भासित करते हुए वन में प्रवेश किया, उस समय वे विद्युल्लता की सी शोभा को वहन कर रही थीं। वहाँ वन–पथ के वृक्ष प्रचुर परिमाण में पुष्प–सम्पत्ति धारण किए हुए थे। वन के भ्रमरों ने उनके सुगन्धिपूर्ण अङ्गरागों से मुग्ध होकर उन सुराङ्गनाओं की दुर्बल भुजलताओं का सेवन किया जिनमें अलक्तक के लेप से अरुण वर के पल्लव के समान हथेलियाँ थीं और जिनके नखों से किरणें मञ्जरी की तरह निकल रही थीं। भ्रमरपङ्क्ति से डरी हुई किसी अप्सरा को लक्ष्य कर किसी ने कहा– 'मानिनि ! नूतन–पल्लव–सदृश अपने हाथों के इतस्ततः सञ्चालन से व्यर्थ में कष्ट मत उठाओ। यह भ्रमर–पङ्क्ति तो कल्पलताओं के भ्रम में पड़कर तुम्हारे पास आई हुई है। तुम क्यों डरती हो ? कहीं कोई चतुर सखी अपनी मानवती सखी को चतुरतापूर्वक सीख दे रही थी। वन–विहार में अनुरक्त अप्सराओं की मनःस्थिति का कवि ने सुन्दर चित्रण किया है। इन्द्रकील की अधित्यका पर वृक्षों में सुन्दर–सुन्दर फूल खिले हुए थे। सुराङ्गनायें वृक्षों के सुन्दर पुष्पों पर मोहित हो गई थीं। उनके हाथों के लिए दे पुष्प सुलभ थे, किन्तु वे तो उन पुष्पों का स्वयं चयन न कर परिचर्याभिलाषी प्रिय सहचरों के द्वारा चुने हुए पुष्पों को ही ग्रहण करती थीं। मानिनी नायिका का अत्यन्त सरस एवं भावपूर्ण चित्र प्राप्त होता है। किसी गन्धर्व ने किसी अप्सरा को भ्रमवश उसकी सपत्नी के नाम से तार–स्वर में सम्बोधित कर पुष्पों का गुच्छा प्रदान किया। इस पर उस मानिनी ने कुछ नहीं कहा। वह आँखों में आँसू भरकर केवल पैर से भूमि को कुरेदने लगी।

सन्ध्या वर्णन

इसमें सूर्यास्त, अन्धकार, रात्रि, तारे, चन्द्रोदय, चन्द्रिका तथा चन्द्रमा आदि का वर्णन हुआ है। इन सब वर्णनों के आश्रय अप्सराएँ एवं गन्धर्व–गण हैं, किन्तु ऐसे दृश्य पाठक या श्रोता के भावों के भी आलम्बन होते हैं।

चन्द्र और ताराओं के सम्बन्ध को नायक–नायिका के दृष्टान्त से प्रकट करता हुआ कवि कहता है कि चन्द्रमा ने अपने किरणरूपी हाथों को फैलाकर अपनी तारका–रूपिणी नायिका का कण्ठाश्लेष पूर्वक आलिङ्गन किया। उस समय उसकी किरणों की लालिमा सर्वत्र फैली हुई अङ्गराग की भाँति विशोभित होने लगी। चन्द्र–किरणों के वृक्ष की छाया के शबलित होने का सुन्दर वर्णन किया गया है। राका–रमणी ने कामदेव का अभिषेक करने के लिए, जिसकी किरणें ही जलराशि हैं

और जिसका चिह्न कमल के समान है, ऐसे चन्द्रमा को रजत–कलश के समान उठा लिया। रात्रि में अप्सराएं रमणार्थ अपने को विभूषित करने की अभिलाषा करने लगीं। रात्रिकालीन वायु का भी सुन्दर चित्रण प्राप्त होता है। 'जलकणों के वहनकर्ता रात्रिकालीन वायु ने खिली हुई कुमुदिनी के सौरभ को, जिसमें पराग उड़ रहा था, बिखेरते हुए वनराजियों को, जिनमें पक्षी सो रहे थे, थोड़ा–थोड़ा झकझोर दिया। रात्रि में चक्रवाक का दुःख भी हृदयद्रावक है। यामिनी विरही चक्रवाक पक्षी ने दिन में अपनी वधू के साथ रहकर धैर्यपूर्वक सूर्य की प्रखर किरणों को सह लिया किन्तु रात्रि में वियोगावस्था में चन्द्रमा की शीतल किरणों को न सह सका, क्योंकि जब हृदय वेदना से व्यथित रहता है, तब सब कुछ असह्य हो जाता है।

ऋतु वर्णन

किरातार्जुनीय में ऋतु–वर्णन दो पृथक स्थलों पर प्राप्त होता है। चतुर्थ सर्ग में केवल शरद का तथा दशम सर्ग में छः ऋतुओं का वर्णन किया गया है।

अर्जुन शरद ऋतु की शोभा को देखकर बहुत प्रसन्न हुए। ग्राम की सीमा के समीप के भूमि खण्ड झुके हुए धान की बालों से सुशोभित हो रहे थे। वहाँ कीचड़ नाममात्र को भी नहीं था। जहाँ कहीं जल था भी, वहाँ जल में कमल शोभित हो रहे थे। अर्जुन शरद ऋतु की सब सम्पत्तियों को अपने प्रति उपहार– रूप में दी गई समझकर अतिप्रसन्न हुए। शरद् ऋतु में सरोवर की शोभा का भी सुन्दर वर्णन मिलता है। कहीं–कहीं सरोवरों के जल जिनमें विकसित कमल शोभित हो रहे थे, फेन और कमल पराग से आच्छादित थे, जिन्हें देखकर अर्जुन को पृथ्वी पर खिले हुए कमल का भ्रम हो रहा था, किन्तु ऊपर की घोर उल्लुण्ठन करते हुए पाठीन (हजार दांत वाली मछली) से अभिताड़ित होकर पुष्प–पराग और फेन राशि के हट जाने से जल दिखायी पड़ने लगता था, जिससे अर्जुन का भ्रम दूर हो गया। शस्य–पालिकाओं को देखकर अर्जुन ने शरद् ऋतु को सफल माना। इस ऋतु में मयूररुत के श्रुतिकटु तथा हंस–कूजित के कर्ण प्रिय होने का भी वर्णन है।

2. शिशुपालवध में पर्यावरण

समुद्र–वर्णन

शिशुपालवध का समुद्र वर्णन रूढ़ि का पालनमात्र प्रतीत होता है। यहाँ समुद्र के प्रति भावों के आश्रय श्रीकृष्ण हैं। उन्होंने भूमि का आलिङ्गन किये हुए (पक्षान्तर में पृथ्वी पर पड़े हुए), उच्च ध्वनि करते हुए (पक्षान्तर में जोर से चिल्लाते हुए), चञ्चल बाहु के समान विशाल तरङ्गों वाले, फेनयुक्त (पक्षान्तर में मुख से फैन गिराते हुए) सरित्पति समुद्र को अपस्मार (मिरगी) का रोगी समझा।' नदियों के समुद्र से ही बनने तथा उसी में प्रविष्ट होने पर कवि ने सुन्दर कल्पना की है– 'मुनीश्वरों के द्वारा वेद से अभिप्राय को लेकर रची गई तथा वेदों में ही प्रविष्ट होती हुई स्मृतियों के समान, मेघों के द्वारा समुद्र से ही 'जल को लेकर (वृष्टि द्वारा) तैयार की गई तथा पुनः समुद्र में प्रवेश करती हुई नदियों को श्रीकृष्ण ने देखा। विभिन्न दिशाओं में होने वाले बहुत से पदार्थों को बेचकर अधिक लाभ किए हुए तथा वहाँ होने वाले बहुमूल्य पदार्थों को (अपने या दूसरे देश में ले जाकर बेचने के लिए) समुद्र–गामी नावों में रखते हुए समुद्र–द्वीप वासी व्यापारियों का श्रीकृष्ण ने अभिनन्दन किया। प्रलय काल के बान्धव तथा उत्सङ्ग–रूपी शय्या पर सोने वाले, श्रीकृष्ण को आया हुआ देखकर समुद्र ने अतिशय हर्ष से तरङ्ग रूपी हाथों को फैलाकर मानो उनका प्रत्युद्गमन

किया। समुद्र–वर्णन के प्रसङ्ग में शीतल–मन्द– सुगन्ध समीर का भी सुन्दर वर्णन हुआ है। 'अपने साथ जल–कणों को लिए हुए (शीतल) तथा इलायची की लता को कम्पित करने से गन्ध युक्त वायु तीर पर चलते हुए श्रीकृष्ण के स्वेद–लवों को प्रति–क्षण दूर करती थी।'' समुद्र ने लवङ्ग– माला, नारियल तथा कच्ची सुपारी द्वारा श्रीकृष्ण के सैनिकों का आतिथ्य किया।

रैवतक पर्वत वर्णन –

शिशुपालवध में रैवतक पर्वत का अतिसुन्दर वर्णन हुआ है। इस पर्वत का दृश्य श्रीकृष्ण तथा उनके सारथि दारुक के नेत्रों के सामने जैसा आया, उसी प्रकार वर्णित हुआ है। इसलिए पर्वत के प्रति भावों के आश्रय श्रीकृष्ण तथा दारुक हैं। वैसे इस प्रकार के प्राकृतिक दृश्य पाठक या श्रोता के भावों के भी आलम्बन होते हैं।

इस पर्वत वर्णन में किरातार्जुनीय के पर्वत वर्णन का अनुकरण परिलक्षित होता है। वहाँ यक्ष अर्जुन के प्रति पर्वत का वर्णन करता है तो यहाँ दारुक श्रीकृष्ण के प्रति पर्वत शोभा का। श्रीकृष्ण ने रैवतक को अनेक बार देखा था, फिर भी उसने उनके आश्चर्य को बढ़ा दिया। यह ठीक ही है, क्योंकि जो प्रतिक्षण नवीनता धारण करता है, वही रमणीयता का स्वरूप है। सहस्रों शिखरों से आकाश में तथा सहस्रों पादों (समीपवर्ती पर्वतों) से पृथ्वी में फैलकर स्थित तथा सूर्य और चन्द्र को दोनों नेत्रों के रूप में धारण करते हुए, अतएव सहस्त्रों मस्तकों से आकाश में तथा सहस्रों चरणों से पृथ्वी में व्याप्त होकर स्थित और सूर्य चन्द्र जिसके नेत्र हैं, ऐसे हिरण्यगर्भ के समान उस रैवतक पर्वत को श्रीकृष्ण ने देखा। रैवतक पर कमल शोभा का वर्णन नवीन कल्पना के साथ करते हुए कवि की उक्ति है कि 'अपनी–अपनी स्त्री की प्रियोक्ति के अभिलाषुक तथा मद से कुछ चञ्चल और आलसी पक्षियों के ऊपर वह पर्वत पिंजड़े बने हुए पत्तों वाले कमल रूपी छतरी से छाया कर रहा था। यह अनेक वृक्षों तथा निर्मल जल को धारण करता है। अमराङ्गनाओं का यहाँ निवास है। इस पर्वत के ऊँचाई तथा सौन्दर्य रूपी गुण प्रगल्भ वाक् कवियों को भी असत्यवक्ता नहीं बनाते। इसकी रत्न– सम्पन्नता की अनेक बार चर्चा हुई है। यहाँ इन्द्रनील, सूर्यकान्त तथा मरकता आदि मणियाँ प्रचुर मात्रा में हैं। सुवर्णमयी भूमि को भी यहाँ देखा जा सकता है। यह कमलों का उत्पत्ति–स्थान है।

अभी तक रैवतक की जिस शोभा का वर्णन किया गया, यह वह शोभा है। जिसका आनन्द श्रीकृष्ण ने रैवतक को स्वयं देखकर लिया। अनन्तर दारुक श्रीकृष्ण के प्रति रैवतक की शोभा का वर्णन करता है

ऋतु–वर्णन –

शिशुपालय में षष्ठ सर्ग में छः ऋतुओं का पहले विस्तार से तथा अन्त में संक्षेप में वर्णन किया गया है। यह वर्णन उद्दीपन रूप में हुआ है। विभिन्न ऋतुओं में भिन्न–भिन्न पुष्पों के विकसित होने आदि के वर्णन के साथ विभिन्न नायक–नायिकाओं की तरह–तरह की क्रीड़ाओं का भी वर्णन हुआ है। किरातार्जुनीय में शरद ऋतु से और शिशुपालवध में वसन्त ऋतु से इस वर्णन का आरम्भ किया गया है। किरातार्जुनीय में भी सब ऋतुएँ एकसाथ प्रादुर्भूत हुई। शिशुपालवध में भी श्रीकृष्ण की सेवा करने के लिए सब ऋतुयों ने एकसाथ अपने चिह्न प्रकट कर दिए।' सब ऋतुएं किस प्रकार एकसाथ प्रादुर्भूत हुई इसका भारवि ने अति सुन्दर कारण दिया है।

वसन्त ऋतु में मृगनयनियों के ललाट में उत्पन्न श्रम–कणों को सुखाते हुए उनके केश–कलाप को हिलाने वाला, नील–कमलों से युक्त जलाशयों को तरङ्ग–श्रेणि को चपल करता हुआ मलय–पवन बहने लगा।

जिस ऋतु में शिरीष पुष्प के पराग की कान्ति सूर्य के घोड़ों के हरितवर्ण वाले रोमों की समानता करती है, नव–मल्लिका के सुगन्ध को स्थायी करता हुआ वह ग्रीष्म आ गया। कोमल पाटल कलिकाओं को विकसित करने वाली तथा अपनी अङ्गनाओं के निःश्वास के सदृश वायु के बहते रहने पर विलासी लोग मद से चञ्चल हो उठे।

श्रावण मास में आकाश में मेघों को देखकर सब स्त्रियाँ सम्भोगार्थं इच्छा करने लगीं। कदम्ब पुष्प के पराग से आकाश को अरुण किए हुए कदली–पुष्प की सुगन्ध से युक्त पवन ने रागियों के मन में स्त्री–विषयक नूतन राग उत्पन्न किया। मेघों ने थोड़ा ही जल बरसाकर रैवतक को यादव नृपतियों तथा उनकी रमणियों के आनन्दपूर्वक विहार के योग्य बना दिया। वर्षा ऋतु में मयूर नृत्य करने लगे। इस ऋतु में केतकी, कुटज तथा मालती–पुष्प के विकसित होने का सुन्दर वर्णन किया गया है।

शरद ऋतु में हंसों के शब्द ने मधुरता को तथा मयूररुत ने कर्कशता को प्राप्त किया। हंस–ध्वनि से पराजित ध्वनि वाले मयूरों के पङ्ख मानो ईर्ष्या या क्रोध से झड़ गये। सर्वत्र, जपा तथा सप्तपर्ण पुष्प विकसित होने लगे। आश्विन मास में गोपवधुएँ धान की रखवाली कर रही थीं और मृग उनके सङ्गीत–श्रवण में व्याप्त थे ––इस भाव पर कवि की सरस कल्पना देखेंकृ 'गोप–वधुओं ने, उच्च स्वर से गाए गए (उनके) मधुर–गान को सुनते हुये (अतएव) धान खाने की इच्छा नहीं करने वाले मृगों को नहीं भगाया। मृगों की सङ्गीत–प्रियता लोक– प्रसिद्ध है।

यमुना–वर्णन –

शिशुपालवध में यमुना का अतिसंक्षेप में वर्णन किया गया है जो परम्परा का निर्वाह मात्र प्रतीत होता है। यमुना ऊष्ण–रश्मि सूर्य की पुत्री होकर भी शीतल, यमराज की बहन होकर भी सबकी प्राणभूत तथा कृष्ण वर्ण वाली होती हुई भी शुद्धि को अधिक करने वाले जलों से पापों को नष्ट करने में अतिशय समर्थ है। यदि शास्त्र से अनुमान प्रबल है तो इस यमुना ने ही समुद्र को पूरा किया है, गङ्गा ने नहीं, यही ठीक है, अन्यथा समुद्र का पानी गङ्गा के प्रवाहों से भस्मरहित किये गये शङ्कर के कण्ठ के समान (कृष्ण–वर्ण) कैसे होता?

प्रभात–वर्णन –

शिशुपालवध में प्रभात–वर्णन का सन्निवेश अत्यन्त उपयुक्त स्थान पर श्रीकृष्ण तथा अन्य राजाओं के जगाने के लिए मागधों के गानरूप में प्राप्त होता है। उनके गान के साथ मृदङ्ग, वीणा तथा वेणु आदि वाद्यों के बजने का भी वर्णन है। शिशुपालवध में प्रभात–वर्णन के आश्रय स्वयं श्रीकृष्ण तथा रति श्रान्त सुख–शयित यादव राजा तथा उनकी अङ्गनाएँ हैं, किन्तु इस प्रभात–वर्णन के दृश्य श्रोता या पाठक के भावों के भी आलम्बन हो सकते हैं

प्रातःकाल का सर्वाधिक सुन्दर वर्णन कवि की इस उक्ति में प्राप्त होता है– 'कुमुद वन श्रीहीन हो रहा है, कमल–वन श्री सम्पन्न हो रहा है, उलूक का मन खिन्न है और चक्रवाक मिथुन आनन्द–विभोर हो रहा है। सूर्य उदय को प्राप्त कर रहा है और चन्द्रमा अस्त को। दुष्ट देव की चेष्टाओं का परिणाम विचित्र होता है, यह आश्चर्य है।

सूर्य की किरणों का समूह तपाये गये सुवर्ण के समान है और बडवाग्नि की ज्वाला के समान शोभित हो रहा है। नदियों पर पड़ती हुई सूर्य किरणें अतिसुन्दर लग रही हैं। रात्रि में रमणियों द्वारा पीए गए मद्य से खाली भी स्वर्ण– चषक गोरोचन के समान अरुण वर्ण वाली उदित होते हुए सूर्य की किरणों से व्याप्त होकर इस समय भी मद्य से भरे हुए के समान शोभित हो रहा है। सूर्य द्वारा कमलों के विकसित किये जाने पर कवि की नूतन एवं सरस कल्पना देखें – 'दिन के प्रारम्भ में रागवान् यह सूर्य चन्द्रमा को कराग्र से निर्दयता–पूर्वक शीघ्र ही निचोड़कर मेघ से गिरे हुए नवीन जल के समान श्वेत सौन्दर्य रस को श्वेत कमलों के भीतर मानो अच्छी तरह छोड़ सा रहा है

सन्ध्या–वर्णन–

भारवि के अनुकरण पर माघ ने भी सन्ध्यादि का अतिविस्तार से वर्णन किया है। इसमें सूर्यास्त, अन्धकार, चन्द्रोदय, रात्रि तथा तारक–गण आदि का वर्णन उद्दीपन रूप में हुआ है। शिशुपालवध में सूर्यास्त वर्णन का प्रारम्भ इस प्रकार हुआ है। जलाशय में डूबने से मानिनियों के मान को दूर किए हुए एवं विमल शरीर – कान्ति वाले यादवों को देखकर सूर्य भगवान् ने पश्चिम समुद्र की जल–तरङ्गों में मज्जन करना चाहा। रति के लिए अत्यन्त उत्कण्ठित कोई रमणी, गवाक्ष की ओर देखती हुई अस्ताचल के तथा सूर्य के मध्यभाग को मानो नाप रही थी (अर्थात् अब सूर्य और अस्ताचल के बीच में एक हाथ शेष है, अब आधा हाथ शेष है, इत्यादि अनुमान कर रही थी)।

3. नैषधीयचरितम में पर्यावरण

उपवन–वर्णन–

दमयन्ती के प्रति पूर्व राग व्यथित नल मनोविनोदार्थ क्रीडोपवन में जाते हैं। उद्यान वर्णन के प्रसङ्ग में श्रीहर्ष ने आचार्य कथित सब वस्तुओं के वर्णन को यथास्थान सन्निविष्ट किया है और उनका यह सन्निवेश इस प्रकार का है कि वह शास्त्र. नियम पालन मात्र प्रतीत नहीं होता। उद्यान की प्रत्येक वस्तु को कवि ने प्रिया विरह–व्यथित प्रेमी की दृष्टि से देखा है, तभी तो उपवन के सभी फूल और फल उन्हें दुःख बढ़ाते हुए से प्रतीत होते हैं, घटाते हुए–से नहीं। इस उपवन–वर्णन में फल–फूल आदि आलम्बनों का चित्रण करते समय श्रीहर्ष ने आश्रय (नल) के अनुभावों को भी प्रदर्शित किया है। केतकी पुष्प को देखकर नल क्रोध से उसकी निन्दा करते हैं – 'तुम्हारे अग्रभागरूपी सुई की सहायता से कामदेव कामी स्त्री. पुरुषों के दुष्कीर्तिरूप वस्त्रों को सीता है और आरे के समान आकार वाले तुम्हारे पत्तों से वियोगियों के हृदय रूप लकड़ी पर अवश्य ही आरे के समान व्यवहार करता है।

उपवन में सरोवर का भी वर्णन कवि ने किया है और उसकी प्रत्येक विशेषता को सागर की किसी न किसी विशेषता के समान बताया है। उस क्रीडा सर के मृणाल समूह जल–निलीन ऐरावतों के दन्त–समूह हैं, जो शेषनाग की पूँछ के समान कान्तिवाले हैं। श्वेत कमल चन्द्रमा है। शैवाल बाडवाग्नि की धूम राशि है। कमलिनी अप्सरा सदृश है। वायु से चञ्चल तीरस्थ वृक्ष मैनाक–पर्वत सदृश है।

सन्ध्या–वर्णन

भारवि और माघ के अनुकरण पर श्रीहर्ष ने भी सन्ध्या का विस्तृत वर्णन किया है। इस प्रसङ्ग में कवि ने सूर्यास्त, सन्ध्यागमन, अन्धकार, तारे, चन्द्रोदय, चन्द्रिका, चन्द्रमा आदि का वर्णन किया है। कवि ने यह वर्णन एकान्त में प्रासाद के सप्तम तल में बैठे हुए नल–दमयन्ती के मुख से कराया है। इसलिए यह उनके भावों के उद्दीपन रूप में है।

कवि ने तारों का अतिविस्तार से वर्णन किया है जो अनेक नूतन कल्पनाओं से भरा हुआ है। एक स्थल पर वे कहते हैं अनार को खाने वाले सायंकाल ने सूर्य बिम्ब–रूप पके हुए अनार के फल को तोड़कर सन्ध्यारूपी साल रङ्ग के छिलके को फेंक दिया है तारारूप इसके निःसार बीजों को थूक दिया है। तारों के प्रति उनकी एक नवीन कल्पना देखें– 'रात्रि में विरह–व्यथित, आकाश–गङ्गा के तीर पर रहने वाली चक्रवाकियों के आँसुओं की बूंदें ही ये तारिकाएँ हैं और उनकी धार हो पृथ्वी पर वर्षा जल के रूप में गिरती है।

अनन्तर अन्धकार का अतिविस्तार से अनेक कल्पनामिश्रित वर्णन हुआ है। चारों दिशाओं में फैले हुए अन्धकार के विषय में कवि का कथन है कि 'पूर्व में ऐरावत के कृष्ण मदजल, दक्षिण में यमराज का महिष, पश्चिम में सूर्यरूपी महाकाल के फल का काला बीज तथा उत्तर में उदीची रूपी नायिका की चौत्ररथ नाम की पत्र– रचना की सामग्री रूप कस्तूरी ही उन दिशाओं में अन्धकार के नाम से कथित है। – अन्धकार कोई पृथक् वस्तु नहीं है।' इसी प्रकार ऊर्ध्वदिक् तथा अधोदिक् में फैले हुए अन्धकार का भी वर्णन किया गया है।

इसके बाद चन्द्रोदय, चन्द्र तथा चन्द्रिका का वर्णन किया गया है। यह चन्द्रवर्णन नल तथा दमयन्ती अलग–अलग करते हैं। चन्द्रोदय के समय की लालिमा के विषय में कवि की सरस उक्ति है। 'अभी चन्द्रदेव उदयाचल के शिखर रूपी जवनिका से क्षणमात्र ढके हुए हैं, पर उनकी प्रथम चन्द्रिकाएँ ही चकोरों के चञ्चु–पुटों को तृप्त कर रही हैं।

प्रभात वर्णन

नैषधचरित में चन्द्रमा की कान्ति के क्षीण होने का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है – ''(पहले अधिक प्रकाशमान किन्तु इस समय) अतिक्षीण ताराएँ रात्रि के समान दृष्टिगोचर नहीं हो रही हैं। सूर्य की किरणें परस्पर अहमहमिका से आकाश में व्याप्त हो रही हैं। क्षीण कान्ति यह चन्द्रमा रात्रि के अन्धकार से युद्ध करने वाली अपनी कान्ति की परिश्रान्ति को कह रहा है। इस प्रकार का वर्णन शिशुपालवध में भी प्राप्त होता है, किन्तु माघ का वर्णन बहुत सीधा है जबकि श्रीहर्ष ने उसी को भावपूर्वक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है।

श्रीहर्ष ने प्रभात का ऐसा वर्णन किया है जो उनके सूक्ष्म निरीक्षण तथा उनकी बहुज्ञता का परिचायक है। अपनी कल्पना के उपकरणों का चयन उन्होंने वेदों, शास्त्रों तथा पुराणादि से किया है किन्तु ऐसे स्थलों पर वर्णन कवि की दुरूह कल्पना के कारण कहीं–कहीं अत्यन्त बोझिल सा लगता है। कविकृत प्रभात–वर्णन के कुछ चित्र इस प्रकार हैं– 'अन्धकार समूह लाक्षा से भी अधिक लाल सूर्य किरणों से अनेक श्वेत पंखों वाले हंसों के चञ्चल चञ्चुपुट से स्पष्टतः छुये जाते हुए पङ्कज समूह के समान शोभित होता है और अपने को अधिक काली मानने वाली भ्रमरी अरुणतम

सूर्य किरणों से धूमिल कान्ति के समान शोभती हैं। ओस–कणों का कवि ने अपनी कल्पना से इस प्रकार वर्णन किया है। 'रात्रि में कुश के अग्रभाग पर पड़ी ओस की बूँदें प्रभात में ऐसी प्रतीत हैं, मानो लोहे की सुईयों पर छेद करने के लिए मोती रखे हों।

20.3 सारांश

इस प्रकार बृहत्त्रयी में प्राप्त वस्तु–वर्णन को पर्याप्त विस्तार के साथ प्रस्तुत किया गया है। किरातार्जुनीय के वस्तु–वर्णन के अनन्तर जब शिशुपालवध के वस्तु– वर्णन को प्रस्तुत किया गया तब भारवि के साथ माघ की तुलना को भी यथावसर बताया जा चुका है। अनन्तर नैषधचरित के वस्तु–वर्णन का विवेचन करते समय भारवि और माघ के साथ श्रीहर्ष के साम्य की ओर यथावसर सङ्केत किया जा चुका है।

माघ भारवि की ही परम्परा के कवि हैं। भारवि के विचित्र मार्ग को उन्होंने और आगे बढ़ाया। उनमें भी पाण्डित्य प्रदर्शन की भावना की अधिकता है। उन्होंने भी जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से अपने अनुभवों को सङ्ग्रहीत कर यथावसर उनका सन्निवेश अपने काव्य में किया है। उनका भी विविध शास्त्र–ज्ञान उनके वर्णनों से जाना जा सकता है। प्रकृति–वर्णन में माघ का कौशल अद्भुत है। उनकी दृष्टि जहाँ प्रकृति–वर्णन पर गई, वहाँ उन्होंने उसका पूरा चित्र सामने रख दिया, जिसको पढ़कर पाठक स्वयं ही तादात्म्य का अनुभव करने लगता है। माघ का प्रकृति–वर्णन शृङ्गार–मय हैकृउसमें भी संयोग पक्ष की प्रधानता है। उन्होंने वन, उपवन, पर्वत, नदी, सरोवर, वृक्ष, लता, सन्ध्या, प्रातः, ऋतु, अन्धकार, प्रकाश आदि प्रकृति के विभिन्न रूपों को उद्दीपन के रूप में ग्रहण किया। उन्होंने अपने वर्णनों को अलङ्कारों से सज्जित करके बहुत सजीव एवं हृदयग्राही बना दिया है। उन्होंने रैवतक पर्वत का यमकालङ्कार द्वारा प्रतिसुन्दर वर्णन किया है। उनकी उत्प्रेक्षाएँ बहुत भावपूर्ण हैं उनकी कल्पनाएँ कहीं–कहीं बिलकुल नई हैं। उनकी व्यञ्जना–प्रणाली और अनुपम कल्पना चातुरी में कालिदास की सी सुन्दर उपमाएँ, भारवि का सा अर्थ– गाम्भीर्य तथा दण्डी सा ललित पद–विन्यास पाया जाता है। माघ के वर्णन भी भारवि की ही भाँति उनके अधीत विषयों के ज्ञान पर आधारित हैं। उनके वर्णनों में कलात्मकता, विविधता तथा हृदयावर्जकता है।

श्रीहर्ष भारवि और माघ की परम्परा के कवि हैं। उन्होंने जो कुछ लिखा, विद्वद्वर्ग के लिए लिखा है। उनके वस्तु–वर्णन में नूतन कल्पनाओं का विलास दर्शनीय है। एक से एक नई कल्पना प्रस्तुत करने में वे भारवि और माघ से कहीं आगे है। एक ही बात को अनेक ढंग से कहने की उनकी सामर्थ्य भी प्रशंसनीय है। एक ही वस्तु के अनेक चित्र अङ्कित करने में भी वे अतिकुशल हैं। एक ही श्लोक में बहुत लम्बे भाव को प्रस्तुत करने की भी उनमें अद्भुत क्षमता है। चन्द्र–वर्णन में इस प्रकार के अनेक उदाहरण देखे जा सकते हैं। श्रीहर्ष ने अप्रस्तुत की भी सुन्दर योजना की है, किन्तु कहीं–कहीं उनका अप्रस्तुत विधान बड़ा दुरुह एवं बोझिल बन गया है। श्रीहर्ष ने प्रकृति–वर्णन उद्दीपन रूप में किया है। उन्होंने अपने काव्य को आपादमस्तक अलंकारों से सजाया है। उनके विविध वर्णन उनके विविध शास्त्र ज्ञान के स्पष्ट परिचायक हैं। उनकी भाषा में सुन्दर प्रवाह है। यमक और श्लेष प्रयोग में वे अतिनिष्णात है। यमक और श्लेषादि का प्रयोग वे बड़े सहज रूप में करते हैं। श्रीहर्ष ने माघ आदि कवियों के समान अनावश्यक वस्तु– वर्णनों का सन्निवेश अपने काव्य में नहीं किया है। उनके वर्णनों में वौद्धिक चमत्कार अधिक है – हृदय–पक्ष उतना नहीं झलकता है।

20.4 शब्दावली

पर्यावरणम्	–	परिसमन्तात् आवरण–पर्यावरणम्
आवरण	–	ढ़ँकना अर्थात् छाया
सृष्टि	–	संसार
कृत	–	रचा गया
सङ्ग्रहीत	–	एकत्रित करना

20.5 बोध–अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न – पर्यावरण से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – पर्यावरण का शाब्दिक अर्थों में तात्पर्य है कि जो हमारे चारों ओर छाया आवरण (परि़यावरण – पर्यावरण) ही पर्यावरण है– = परिसमन्तात् आवरण–पर्यावरणम्। अर्थात् जिसके अनुसार जो सब ओर से सृष्टि को व्याप्त किए है, वही पर्यावरण है।

प्रश्न – संस्कृत साहित्य में बृहत्त्रयी से क्या तात्पर्य है?

उत्तर – बृहत्त्रयी के अन्तर्गत संस्कृत साहित्य के निम्नलिखित तीन महाकाव्य माने जाते हैं जो इस प्रकार हैं– (1) किरातार्जुनीय (2) शिशुपालवध (3) नैषधीयचरित।

प्रश्न – किरातार्जुनीय के रचयिता कौन हैं?

उत्तर – किरातार्जुनीय के रचयिता भारवि हैं।

प्रश्न – शिशुपालवध के रचयिता कौन हैं?

उत्तर – शिशुपालवध के रचयिता माघ हैं।

प्रश्न – नैषधीयचरित के रचयिता कौन हैं?

उत्तर – नैषधीयचरित के रचयिता श्री हर्ष हैं।

प्रश्न – किरातार्जुनीय में किन किन पर्वतों का वर्णन मिलता है?

उत्तर – किरातार्जुनीय में हिमालय, कैलास तथा इन्द्रकील पर्वत का वर्णन प्राप्त होता है।

20.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- किरातार्जुनीय (भारवि –प्रणीत), मल्लिनाथकृत घण्टापथ सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, 1961 ई0।
- नैषधीयचरित (श्रीहर्ष–प्रणीत), नारायण कृत नैषधीयप्रकाश टीका सहित, निर्णयसागर प्रेस, बम्बई, 1952 ई0।
- नैषधमहाकाव्य (श्रीहर्ष–प्रणीत) मल्लिनाथ कृत जीवातु सहित, चौखम्बा संस्कृत सीरिज, बनारस, 1954 ई0।
- शिशुपालवध (माघ– प्रणीत), मल्लिनाथकृत सर्वकषा सहित, चौखम्बा विद्याभवन, बनारस, 1955 ई0।

- महाकवि माघ, उनका जीवन तथा कृतियाँ (डॉ0 मनमोहनलाल जगन्नाथ शर्मा कृत शोधप्रबन्ध), नवयुग प्रकाशन, दिल्ली, 1963 ई0।
- संस्कृत साहित्य का इतिहास, पं0 बलदेव उपाध्याय, शारदा मन्दिर, वाराणसी. 1968 ई0।
- हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित निबन्ध
- महाकवि भारवि का जीवन दर्शन, डॉ0 प्रभुदयालु अग्निहोत्री, मध्यप्रदेश सन्देश, 4 जनवरी, 1958 ई0।
- शिशुपालवध में रैवतक वर्णन, डॉ0 प्रभुदयालु अग्निहोत्री, कल्पना, दिसम्बर, 1952 ई0।
- संस्कृत साहित्य में ऋतु वर्णन हेमन्त, डॉ0 प्रभुदयालु अग्निहोत्री, अजन्ता, दिसम्बर, 1950 ई0।
- संस्कृत साहित्य में शिशिर वर्णन, डॉ0 प्रभुदयालु अग्निहोत्री, साप्ताहिक परिवर्तन।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY